Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

गंदी बस्ती उन्मूलन संबंधी योजनाएं एवं उनके क्रियान्वयन का समाजशास्त्रीय अध्ययन (इंदौर शहर के संदर्भ में)

डॉ. योगासना कचोले पाराशर
सहायक प्राध्यापक - समाजशास्त्र
देवी अहिल्या आर्ट एंड कॉमर्स जगदाले कॉलेज इंदौर

शोध-सार

मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ है - भोजन, वस्त्र और आवास। मानव की कार्यक्षमता एवं जीवन को सुचारू रूप से सक्रिय रखने के लिए पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र और स्वास्थ्यकर वातावरण में उपयुक्त आवास का होना वांछनीय आवश्यकता है। नगर में रहने वाले निर्धन कमजोर वर्गों की श्रेणी में आता है, संविधान में कमजोर वर्गों के प्रति विशेष शासकीय प्रयासों व संरक्षणों का प्रावधान है। डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक संस्थान महू की स्थापना मूलतः समाज के कमजोर वर्गो से सम्बन्धित समस्याओं पर अनुसंधान करने हेतु की गई है अतः प्रस्तुत अध्ययन में भी नगर में निवास कर रहे निर्धनों को अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में इसके पूर्व में किये गये सर्वेक्षणों से इसलिये भिन्न है क्योंकि इसमें इन्दौर के झुग्गीवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में शासन की योजनाओं के योगदान का अध्ययन नवीनतम आंकड़ों को एकत्र कर के उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

प्रस्तावना

वर्तमान युग मशीनीकरण का युग है। मशीनीकरण औद्योगीकरण का परिणाम है ओद्योगिकरण के जितने भी आयाम है सब मशीन पर निर्भर करते है लेकिन इन मशीनों की कार्यक्षमता को बनाएँ रखने के लिए अनूकुल दशाओं के विकास के लिए श्रमिकों का संतुलित एवं पौष्टिक आहार, शरीर ढकने के लिए पर्याप्त मात्रा में वस्त्र और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए स्वास्थ्य कर आवास की उपलब्धि नितांत आवश्यक है लेकिन औद्योगिकरण नगरीयकरण के परिणाम स्वरूप समाज को जहाँ विज्ञान, शिक्ष, चिकित्सा एवं तकनीकि ज्ञान प्राप्त हुआ है। वहाँ निम्न जीवन स्तर कूपोषण और गंदी बस्तियाँ भी उपहार स्वरूप प्राप्त हुई है। औद्योगिक क्रांति ने मानव समाज को बहुमुखी प्रगती और विकास की और अग्रसर किया है। जिसके कारण जहाँ एक और मानव गौरवान्वित हुआ है तथा सभ्यता के सर्वोच्च शिखर की और

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

पहुंचने का प्रयास कर रहा है। वही दुसरी और अनेक सामाजिक समस्याएं निर्माण हो रही है। औद्योगिक क्रांति में मानव समाज को सशक्त साधन प्रदान कर विकसीत किया है। लेकिन औद्योगिक क्रांति के बाद आज उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के आवास संबंधित समस्या उन्हे 'गन्दी बस्ती में रहने को मजबूर कर रही है। गन्दी बस्तियाँ हमारे समाज में एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में देखी जा रही है मलिन एवं गन्दी बस्तियाँ मूलतः औद्योगिकरण व नगरीकरण की उपज है। यहाँ व्यक्तियों को रोजगार के रूप में छोटा-मोटा काम तो मील जाता है किन्तु रहने को उपर्युक्त आवास नही मिलता इसलिए इन महानगरों को गन्दी बस्तियाँ का रूप धारण करना पड़ता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

''गन्दी बस्ती उन्मूलन और क्रियान्वयन के प्रभाव का सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' इन्दौर शहर के विशेष संदर्भ में यहाँ विषय पूर्णतः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है क्योंकि गन्दी बस्ती उन्मूलन पर तो अनेक अध्ययन हुए है। परन्तु गन्दी बस्ती समस्या के निवारण हेतु क्रियान्वयन और प्रभाव एवं समाज के लोगों पर इसका किस प्रकार से प्रभाव पड़ा है? क्या उनके जीवन स्तर में सुधार आया है ? इन लोगों की दयनीय दशा के लिए क्या राज्य सरकार या गैर सरकारी संगठन अथया स्वयं गन्दी बस्ती में जीवनयापन करने वाले लोगों में स्वयं जागरूकता का आभाव आदि आदि गंभीर प्रश्नों को पूर्व शोधकर्ताओं ने महत्वहीन समझ कर छोड़ दिया है इस विषय की सुक्ष्म जॉच पड़ताल करने से बचने के लिए कोई भी अध्येयता इस तरह के शोध में लिप्त नहीं हो सका है।

इन्दौर की कुल जनसंख्या का एक चौथाई हिस्सा गन्दी बस्ती में निवास करता है जिस गति से इन्दौर का विकास हो रहा है उसी गति से इन्दौर में गन्दी बस्तियों की संख्या भी बढ़ रही है। अतः यह अत्यन्त ही आवश्यक है कि इन्दौर के गन्दी बस्तियों की आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराई जाए जिससे नगर के शेष निवासियों को वस्तुस्थिति का पता चले और इसकी समस्याओं के समाधान में रूचि रखते हो, वे सही दिशा में कार्य कर सकें। प्रस्तुत अध्ययन इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु एक प्रयास है।

नगर में रहने वाले निर्धन कमजोर वर्गों की श्रेणी में आता है, संविधान में कमजोर वर्गों के प्रति विशेष शासकीय प्रयासों व संरक्षणों का प्रावधान है। डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक संस्थान महू

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

की स्थापना मूलतः समाज के कमजोर वर्गो से सम्बन्धित समस्याओं पर अनुसंधान करने हेतु की गई है अतः प्रस्तुत अध्ययन में भी नगर में निवास कर रहे निर्धनों को अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनाया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में इसके पूर्व में किये गये सर्वेक्षणों से इसलिये भिन्न है क्योंकि इसमें इन्दौर के झुग्गीवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में शासन की योजनाओं के योगदान का अध्ययन नवीनतम आंकड़ों को एकत्र कर के उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

इन्दौर के झुग्गीवासियों का विस्तृत आर्थिक एवं सामाजिक सर्वेक्षण निश्चित ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। प्रस्तुत शोध इन्दौर के झुग्गी वासियों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का सर्वेक्षण एवं उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए मध्यप्रदेश शासन के द्वारा किए गए प्रयत्नों का विस्तृत अध्ययन है, जिसमें विषय वस्तु के रूप में इन्दौर जिले का चयन अध्ययन के विशेष संदर्भ में किया गया है।

चिंताजनक यह है कि भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता के बाद से हो रहे निरंतर प्रयासो के बाद भी नगरीय आवास समस्याऐं ज्यों की त्यों है। नगरीय मामलों में राष्ट्रीय संस्थान में अपने अध्ययन में माना कि गंदी बस्ती उन्मूलन कार्यक्रम सक्षम कार्य नही कर पा रहे है। स्पष्ट है कि निर्धनता निवारण कार्यक्रम में ऐसी खामिया है जो योजना के लक्ष्यों को प्रभावित कर रही है। इसी योजना पर गंदी बस्ती उन्मुलन, क्रियान्वयन के बाधक तथ्यों की खोज करना व उनको दूर करने के उपायो को खोजना ही इस अध्ययन का ध्येय होगा ।

इस शोध प्रबंध में मेरे द्वारा महानगरों में उद्योगीकरण होने से जनसंख्या वृद्धि भी तीव्रगति से हो रही है। लेकिन जनसंख्या के अनुपात में उनके आवास संबंधित व्यवस्था नहीं हो पाई है। जिसके कारण उद्योगों में कार्यरत श्रमिक को गन्दी बस्ती में रहने को मजबूर होना पड़ता है।

इन बस्तियों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हेतु पूर्व शोधार्थियों ने पर्याप्त समाधान और निष्कर्ष समस्या के उन्मूलन हेतु नहीं खोजें अतः अध्येयता द्वारा इन सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक पहलूओं से संबंधित अन्य मुद्दों पर गहराई से खोजबिन कर अपने शोध ग्रन्थ को पूर्णतः वैज्ञानिक तथा वस्तुनिष्ठ बनाने एवं ठोस परिणाम प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य

The Asian Thinker

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

झोपड़ी में कभी खाने के लिए है तो कभी नहीं है। उनके बचे वस्त्र के अभाव में अधनंगे घूमते रहते है तथा कुपोषण एवं विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त है। परिवार के महिला एवं पुरूष नशाखोरी एवं जुआखोरी जैसी पतनकारक आदतों के शिकार है। ऐसी दशा में हम भारत के संपूर्ण विकास की बात नहीं कर सकते है। यही बात मेरे मस्तिष्क पटल पर घूमती रही कि इन बेघरबार लोगों जिन्हें समाज झुग्गीवासियों के नाम से जानता है इनके आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए म.प्र. सरकार कौन-कौन से प्रयास कर रही है? उन प्रयासों का लाभ इन लोगों को किस सीमा तक मिल रहा है? वे कौन-कौन से कारण हैं जो इनकी इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है? तथा वे सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर किस प्रकार अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बना सकते है। इसमें एवं समाजसेवी संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले झुग्गीबस्ती विकास कार्यक्रमों उनसे लाभान्वित लोगों, परिवारों की संख्या तथा उनमें अपने आर्थिक विकास के लिए स्वप्रेरणा एवं जागरूकता संबंधी सुझावों का समावेश यथासंभव करते हुए मध्यप्रदेश में निवास करने वाले झुग्गीवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में म.प्र शासन के योगदान का अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना

1. इन्दौर शहर की मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों में जागरूकता का आभाव होगा।

2. इन्दौर शहर की मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं पारिवारिक स्थिति अति निम्न स्तर की होगी।

3. इन्दौर शहर की मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों के लिए किये जाने वाले सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास। वास्तव में परिकल्पनाओं के आभाव से शोध के प्रभावित होने की आशंका बनी रहती है, क्योंकि शोधार्थी का अवचेतन मन किसी भी परिकल्पना को सिद्ध अथवा निरस्त करने का प्रयत्न करने लगता है, यही कारण है कि उपर्युक्त परिकल्पनाओं को आधार लेने के बावजूद हम शून्य परिकल्पना को भी साथ लेकर चल रहे है, ताकि प्रस्तुत शोध पूर्वाग्रहों से ग्रसित न हो और सत्य निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकें।

शोध प्रविधि

समाज विज्ञान में शोध की प्रकृति पूर्णरूप से वैज्ञानिक है क्योंकि आधारभूत वैज्ञानिक प्रविधियों के अभाव में कोई भी शोध निश्चित या अंतिम परिणामों को प्रस्तुत नहीं कर सकता है। वैज्ञानिक प्रकृति का समग्र विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वस्तुनिष्ठता, पक्षपात रहित, क्रियान्वयन, अनुभवजन्य, परिणाम ज्ञान

के क्षेत्र में कार्य-करण संबंधो का अध्ययन, तार्किकता व्यवस्थित क्रमबद्धता, पूर्वानुमान की स्थिति आदि के अंश कुछ ऐसे तत्वों की खोज कर लेना जो मौलिक हो।

वस्तुत वैज्ञानिक प्रविधि के अंतर्गत विषय से संबंधित समस्याओ का निर्धारण ऐसे कार्यशील परिकल्पना का निर्माण व्यवस्थित वर्गीकरण एवं आलेखन तथा सामान्यीकरण आदि को सम्मिलित कर पूर्ण शोध अथवा शोध की अंतिम कसौटी पर पहुंचा जाता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन में अनेक वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। इनमें ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रकार्यात्मक पद्वतिया विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। तथ्यो को एकत्रित करने के लिये सर्वेक्षण पद्वति, प्रश्नावली पद्वति, व्यक्तिक अध्ययन पद्धति, अवलोकन सहभागी और अर्द्ध सहभागी पद्वति, निर्देशन पद्वति, समाजमिति पद्वति, सांख्यिकी पद्धति तथा अनुसूचि साक्षात्कार आदि-आदि सहयोगी पद्वतियो के द्वारा शोध को पूर्ण प्रदान की जाती है।

विश्लेषण

इस प्रकार औद्योगिकरण एवं नगरीकरण ने जहाँ व्यक्ति को विज्ञान, शिक्षा, तकनीकि ज्ञान और एक अच्छी वैज्ञानिक समझ दी है वही करोड़ो व्यक्तियों को नारकिय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया है। नारकीय जीवन को मलिन बस्ती के रूप में देखा जा सकता है। एक छोटी-सी झोपड़ी, कच्चे मकान या एक कोठरी में दस से पन्द्रह व्यक्ति तक रहते है। यहाँ न शुद्ध हवा न सूर्य का प्रकाश और न ही जल निकासी का उचित प्रबंध होता है और न ही कोई बैठने के लिए खुला स्थान होता है। तंग संकरी गली और मलिन बस्तियाँ जहाँ जीवन कम और बिमारियाँ अधिक होती है। पीले मुरझायें चेहरे, चिपके गाल, उभरती हड्डियाँ, फटे मेंले गन्दे कपड़े यहाँ का सौन्दर्य है। यहाँ रहने वाले लोगों को पता नही होता है कि ये कब जवान हो जाते है और कब बुढे हो जाते है। कब इन्हें टी.बी. और केंसर जैसी जानलेवा बिमारियाँ हो जाती है। ये लोग मौत के मुंह में जन्म लेते है इनका जिना मरना समाज के लिए कोई अर्थ नही रखता आखिर गरीब के मरने का कोई अर्थ समाज में होता ही नहीं है। मलिन बस्तियाँ में जी रहे लोगों का जीवन नाली के कीड़े-मकाड़ों के जैसा होता है क्योकि गन्दी बस्तियों में मकान प्रायः अंधे व सिलन युक्त होते है। इनमें शौचालय, स्नानघर, जल निकासी, शुद्ध हवा, रोशनी, बिजल, पानी आदि अति आवश्यक सुविधाओं का आभाव पाया जाता है। यहाँ मच्छर, खटमल, जू, चूहे, छिपकलियाँ अन्य कीटाणुओं की बहुलता पाई जाती है। निवास की यहाँ अर्ध मानवीय दशा है जो कि मानव जाति की शारीरिक व मानसिक दृष्टि से कमजोर पीढ़ी को जन्म दे रही है।

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

गन्दी बस्ती से आशय

स्लम शब्द की उत्पत्ति स्लम से हुई है जिसे जिमोफोलोगिस्ट के द्वारा चट्टान की निचली सतह के मलबे के लिए प्रयुक्त किया है और उनका इसलिए यह मानना सत्य क्यों कि स्लम वह स्थिति है जो कि निम्नतम अथवा गिरी हुई जीवनशील से मिलती है पैट्रीज (1958) स्लम के इस तरह से व्यक्त किया है कि स्लम की उत्पत्ति स्लम शब्द से हुई है इसका शब्दिक अर्थ अज्ञात पिछली गली या रास्ता जैसे गलती से शान्त समझ लिया गया है। स्लम को दासत्व से भी जोड़ा जाता है। आज के विकसित देश भी कभी प्राचीनतम स्लम या कुछ ऐसे ही जीवन की न्यून्तम रिहायसी क्षेत्रों के लिए जिम्मेदार है। अमीर अपने गुलाम, दासत्व रखा करते थे जो प्रायः उनके घरेलू श्रमिक रूप में कार्य करते थे जो छोटे तथा घटिया स्तर के मकानों में रहते थे ।

गन्दी बस्तियाँ में आर्थिक स्थितियाँ बहुत ही निम्न होती है झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोगों के जीवन बड़ी ही संघर्ष पूर्ण रहता है। झुग्गी बस्ती परिवारों को ऐसा क्षेत्र होता है जिसमें हर मौलिक आवश्यकतओं की पूर्ति होना असम्भव होता है। जीवन आर्थिक तंगी व कर्ज के मध्य ही बितता है। समस्याओं के मध्य रहने वाले लोगों का जीवन इस घुटन भरे माहौल में होता हैं तथा उनकी पारिवारिक स्वरूप विघटित रूप में दिखता है। गन्दी बस्ती में लोगों की स्थिति बड़ी ही दयनीय होती है। इस कारण आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से यह क्षेत्र पिछड़े हुए रहते है ।

गन्दी बस्ती नाम लेते ही आँखो के आगे एक चित्र रेखांकित होने लगता है, जहाँ गंदगी पिछड़ापन समस्याओं का अंबार नजर आने लगता है। जहाँ जीवन बिताना तो दूर कुछ देर खड़े रहने की कल्पना मात्र से सभ्य इंसान सिहर उठता है। सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित जानकारी के आधार पर हम झुग्गीबस्ती को इस प्रकार परिभाषित कर सकते है झुग्गी बस्ती यह बस्ती है जहाँ के लोग गरीबी की रेखा के नीचे अपना जीवनयापन करते है तथा जहाँ पानी, बिजली, शौचालय एवं स्वस्थ्यप्रद वातावरण का पूर्णतः अभाव होता है। झुग्गी-बस्तियों में जीवन जीने लायक मुलभूत सुविधाओं का अभाव होता है वे आवश्यक सुविधाएँ जिनके बिना मानव जीवन की कल्पना करना मुश्किल है झुग्गीवासियों के लिये दिवास्वप्न है ।

झुग्गी-बस्तियों पर कुछ विद्वानों न अपने विचार निम्नानुसार दिये है-

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

महात्मा गाँधी के शब्दों में - ‘‘अपनी आँखों से देखे बिना, तुम लोग कल्पना भी नहीं कर सकते कि दुनिया में इन्सानों के रहने के स्थान ऐसे भी हो सकते है। इन गन्दी बस्तियों को देखने के बाद खाना-पीना भी अच्छा नहीं लगता है और देखते ही उल्टी आती है, यहाँ ऐसी गन्दगी है कि मेरे पास कहने को शब्द नहीं है।‘‘

गन्दी बस्ती निवारक गोष्ठी, मुम्बई - ‘‘गन्दी बस्ती उस क्षेत्र को कह सकते हे जो अस्त-व्यस्त बसी हुई हो, अव्यवस्थित रूप से विकसित हो एवं सामान्यतः वह क्षेत्र जनाधिक्य, भीड़-भाड़युक्त हो, टूटे- फूटे घर हो और उनकी मरम्मत के प्रति उपेक्षा बरती गयी हो।‘‘

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि झुग्गीबस्तियाँ वे है, जिनमें मानव जीवनयापन हेतु आवश्यक सुविधाओं का अभाव होता है जिसमें पीने का पानी, आवागमन के लिये सड़के, बिजली, गन्दे पानी एवं मलमूत्र निकासी की व्यवस्था, न शुद्ध हवा और सूर्य के प्रकाश का संचार होता है। मकान ऐसे जो विभिन्न ऋतुओं से मानव की रक्षा भी नहीं करते है। बड़े बड़े नाखुन वाले, कभी-कभी स्नान, मेंले फटे वस्त्र पहनने वाले और स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह अशिक्षित अंधविश्वासी मनुष्य जहाँ निवास करते हो। ये झुग्गीबस्तियां सभ्य समाज के माथे पर कलंक का है।

किसी भी देश का संपूर्ण विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वहाँ के सभी निवासियों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास पूरी तरह से न हो जाए। सभी व्यक्तियों की कम से कम मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, मकान, स्वास्थ्य एवं शिक्षा आदि की पूर्ति आसानी से हो सके। अपनी- अपनी योग्यता, अनुभव एवं रूचि के अनुसार रोजगार मिल सके। वर्तमान समय में हमारे देश में सरकार के द्वारा हर संभव विकास के कार्य किये जा रहे है। लेकिन यदि हम घर से बाहर निकलें तो एक बात साफ तौर पर दिखाई देती है, कि समाज का उच्च वर्ग हर प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त है और वहीं एक वर्ग एक वर्ग हर प्रकार के अभाव में अपना जीवन यापन कर रहा है। एक वर्ग आलीशान मकानों में अच्छी कालोनियों में रह रहा है वहीं दूसरी और एक वर्ग जिसके पास एक साधारण मकान भी नहीं है तथा गन्दी से गन्दी जगह नारकीय स्थिति में फटे-टूटे प्लास्टिक, टाट, बाँस, पेड़ों की टहनियों से बनी झुग्गी-झोपड़ी में नाले के किनारे अपनी जान जोखिम में डालकर रहने के लिए मजबूर है।

निष्कर्ष

The Asian Thinker

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

इन्दौर के झुग्गीवासियों का विस्तृत आर्थिक एवं सामाजिक सर्वेक्षण निश्चित ही महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। प्रस्तुत शोध इन्दौर के झुग्गी वासियों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का सर्वेक्षण एवं उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए मध्यप्रदेश शासन के द्वारा किए गए प्रयत्नों का विस्तृत अध्ययन है। जिसमें विषय वस्तु के रूप में इन्दौर जिले का चयन अध्ययन के विशेष संदर्भ में किया गया है।

हमारे देश (भारत) में वर्तमान समय में औद्योगिक उन्नति के कारण शहरीकरण तेजी से बढ़ा है। शहरों में गरीब वर्ग अच्छी कालोनियों के पास शासन की खाली पड़ी जमीन पर कब्जा करके टाट, पन्नी, बाँस, बल्ली, पेड़ो की टहनियों एवं चद्दर के टुकड़ों से बने अव्यवस्थित एवं असुरक्षित घरों में रहते है जिन्हें हम झुग्गी-झोपड़ी के नाम से जानते है तथा इनमें रहने वाले लोगों को झुग्गीवासी के नाम से पुकारा जाता है। इन झुग्गीबस्तियों में मूलभूत सुविधाएँ जैसे स्वच्छ जलापूर्ति, स्वच्छता, पक्की नालियाँ, अपशिष्ट का संग्रहण एवं निपटान, पक्की सड़के बिजली, आदि का नितान्त अभाव होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध इन्ही झुग्गीवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में शोधार्थी द्वारा अथक प्रयास किये जाने की चेष्टा की है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रो. एम.एल. गुप्ता एवं डॉ. डी.डी. शर्मा-साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
2. हरिशचन्द्र व्यास- अबला से सबला
3. डॉ. रवींन्द्रनाथ मुखर्जी - सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी विवेक प्रकाशन दिल्ली
4. विपिन कुमार - शहरीकरण एक समस्या: एक गंभीर चुनौति, योजना भवन, नईदिल्ली
5. विनोद कुमार - भारत में गरीबी एक नवीन विवेचना योजना भवन, नईदिल्ली
6. शर्मा रामचन्द्र - महानगरीयकरण तथा शहरी संकट और अन्तरद्वन्द स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नईदिल्ली।

The Asian Thinker